रविवार 15 नवंबर, 2020

*विषय — **नश्वर और अमर***

स्वर्ण पाठः **यूहन्ना** 12 : 50

"*मैं जानता हूं, कि उस की आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिये मैं जो बोलता हूं, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूं।*"

उत्तरदायी अध्ययन: **1 कुरिन्थियों 15:50-54**

50 हे भाइयों, मैं यह कहता हूं कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न
विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है।
51 देखे, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे।
52 और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और
मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जांएगे, और हम बदल जाएंगे।
53 क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को
पहिन ले।
54 और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तक वह
वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. नीतिवचन 3 : 5, 8

5 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।
8 ऐसा करने से तेरा शरीर भला चंगा, और तेरी हड्डियां पुष्ट रहेंगी।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2. भजन संहिता 125 : 1, 2

1 जोयहोवा पर भरोसा रखते हैं, वे सिय्योन पर्वत के समान हैं, जो टलता नहीं, वरन सदा बना रहता है।
2 जिस प्रकार यरूशलेम के चारों ओर पहाड़ हैं, उसी प्रकार यहोवा अपनी प्रजा के चारों ओर अब से लेकर सर्वदा तक बना रहेगा।

3. भजन संहिता 40 : 1-3

1 मैंधीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उसने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी।
2 उसने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से उबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है।
3 और उसने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है। बहुतेरे यह देखकर डरेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे॥

4. निर्गमन 20: 1, 2, 7 (*से*;)

1 तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे,
2 कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया है॥
7 तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना॥

5. मत्ती 3 : 16, 17

16 और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा।
17 और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं॥

6. मत्ती 4 : 1-4

1 तब उस समय आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से उस की परीक्षा हो।
2 वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, अन्त में उसे भूख लगी।
3 तब परखने वाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।
4 उस ने उत्तर दिया; कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।

7. यूहन्ना 6: 22 (*से 2nd,*), 24 (वे)-38, 40 (*से* :)

22 दूसरे दिन उस भीड़ ने, जो झील के पार खड़ी थी, यह देखा, कि यहां एक को छोड़कर और कोई छोटी
नाव न थी।
24 ...तो वे भी छोटी छोटी नावों पर चढ़ के यीशु को ढूंढ़ते हुए कफरनहूम को पहुंचे।
25 और झील के पार उस से मिलकर कहा, हे रब्बी, तू यहां कब आया?
26 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुम ने
अचम्भित काम देखे, परन्तु इसलिये कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए।
27 नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है,
जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा, क्योंकि पिता, अर्थात परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी है।
28 उन्होंने उस से कहा, परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम क्या करें?
29 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया; परमेश्वर का कार्य यह है, कि तुम उस पर, जिसे उस ने भेजा है, विश्वास करो।
30 तब उन्होंने उस से कहा, फिर तू कौन का चिन्ह दिखाता है कि हम उसे देखकर तेरी प्रतीति करें, तू कौन
सा काम दिखाता है?
31 हमारे बाप दादों ने जंगल में मन्ना खाया; जैसा लिखा है; कि उस ने उन्हें खाने के लिये स्वर्ग से रोटी दी।
32 यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं कि मूसा ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से न दी, परन्तु मेरा
पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है।
33 क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।
34 तब उन्होंने उस से कहा, हे प्रभु, यह रोटी हमें सर्वदा दिया कर।
35 यीशु ने उन से कहा, जीवन की रोटी मैं हूं: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर
विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा।
36 परन्तु मैं ने तुम से कहा, कि तुम ने मुझे देख भी लिया है, तोभी विश्वास नहीं करते।
37 जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा।
38 क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं।
40 क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है, कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त
जीवन पाए।

8. 2 कुरिन्थियों 5 : 1, 4-8

1 क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की
ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थाई है।

4 और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कराहते रहते हैं; क्योंकि हम उतारना नहीं, वरन और पहिनना
चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए।
5 और जिस ने हमें इसी बात के लिये तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिस ने हमें बयाने में आत्मा भी दिया
है।
6 सो हम सदा ढाढ़स बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से
अलग हैं।
7 क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।
8 इसलिये हम ढाढ़स बान्धे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं।

9. 1 पतरस 1: 16 (यह), 22-25 (*से 1st.*)

16 ...लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं।
22 सो जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया
है, तो तन मन लगा कर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो।
23 क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के
द्वारा नया जन्म पाया है।
24 क्योंकि हर एक प्राणी घास की नाईं है, और उस की सारी शोभा घास के फूल की नाईं है: घास सूख
जाती है, और फूल झड़ जाता है।
25 परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा॥

10. 1 यूहन्ना 2 : 15-17

15 तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस
में पिता का प्रेम नहीं है।
16 क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का
घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।
17 और संसार और उस की अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह
सर्वदा बना रहेगा॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 76 : 20 (पीड़ा)-21

... मनुष्य अमर है और दिव्य अधिकार से जीवित है।

2. 81 : 17-18, 28-30

भगवान की समानता में मनुष्य के रूप में विज्ञान में पता चला अमर होने में मदद नहीं कर सकता।... विज्ञान में, मनुष्य की अमरता भगवान के अच्छे होने पर निर्भर करती है, और अच्छे की अमरता के एक आवश्यक परिणाम के रूप में अनुसरण करती है।

3. 209 : 1-9

मनुष्य, अमर होने के नाते, एक आदर्श अविनाशी जीवन है यह नश्वर विश्वास है जो शरीर को अज्ञानता, भय के रूप में अनुपातहीन और रोगग्रस्त बनाता है या मानव नश्वरों को नियंत्रित करेगा।

मन, अपने सभी स्वरूपों पर सर्वोच्च और उन सभी पर शासन करने वाला, विचारों की अपनी प्रणाली, अपने सभी विशाल निर्माण का जीवन और प्रकाश का केंद्रीय सूर्य है; और मनुष्य दिव्य मन के लिए सहायक है। भौतिक और नश्वर शरीर या मन मनुष्य नहीं है।

4. 214 : 19-25

मनुष्यों को डर लगता है और वे एक आध्यात्मिक शरीर की तुलना में भौतिक शरीर को अधिक मानने का पालन करते हैं। सभी भौतिक ज्ञान, जैसे "ज्ञान का पेड़," उनके दर्द को बढ़ाता है, क्योंकि नश्वर भ्रम भगवान को लूट लेगा, मनुष्य को मार देगा, और इस बीच नरभक्षी के काटने के साथ उनकी मेज तैयार करेगा और धन्यवाद देगा।

5. 215 : 8-10

नश्वरता अस्तित्व की वास्तविकता से परिचित नहीं हैं, क्योंकि सामग्री और मृत्यु दर आत्मा के तथ्यों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं।

6. 476 : 13-17, 23-32

मुर्दा भगवान के बच्चे नहीं हैं। उनके पास कभी भी पूर्ण राज्य नहीं था, जिसे बाद में फिर से हासिल किया जा सकता है। वे नश्वर इतिहास की शुरुआत से थे, "पाप में कल्पना की और अधर्म में माता के गर्भ में लाया।"

याद रखें कि शास्त्र नश्वर मनुष्य के बारे में कहते हैं: "मनुष्य की आयु घास के समान होती है, वह मैदान के फूल की नाईं फूलता है, जो पवन लगते ही ठहर नहीं सकता, और न वह अपने स्थान में फिर मिलता है।"

जब यीशु ने परमेश्वर के बच्चों की बात की, न कि पुरुषों के बच्चों की, तो उन्होंने कहा, "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है;" इसका मतलब है, सत्य और प्रेम वास्तविक मनुष्य में राज्य करता है, यह दर्शाता है कि भगवान की छवि में आदमी बेदाग और शाश्वत है।

7. 295 : 11-24

ईश्वर की स्वयं की छवि में बनाए गए नश्वर अमर की तरह नहीं हैं; लेकिन अनंत आत्मा सभी होने के नाते, नश्वर चेतना वैज्ञानिक तथ्य के लिए अंतिम पैदावार होगी और गायब हो जाएगी, और सही, और हमेशा के लिए होने का वास्तविक अर्थ प्रकट होगा।

नश्वर के माध्यम से भगवान की अभिव्यक्ति खिड़की के कांच के माध्यम से गुजरते हुए प्रकाश है। प्रकाश और कांच कभी नहीं पिघलते हैं, लेकिन सामग्री के रूप में, कांच दीवारों की तुलना में कम अपारदर्शी है। नश्वर मन जिसके माध्यम से सत्य सबसे अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट होता है, वह है जिसने सत्य के लिए एक बेहतर पारदर्शिता बनने के लिए बहुत अधिक भौतिकता - बहुत त्रुटि - खो दी है। फिर, जैसे बादल पतले वाष्प में पिघलता है, यह अब सूरज को छिपाता नहीं है।

8. 260 : 28-7

अगर हम नश्वर वेशभूषा में सोचते हैं, तो उसे अपनी अमर प्रकृति को खो देना चाहिए।

अगर हम शरीर को आनंद के लिए देखते हैं, तो हमें दर्द होता है; जीवन के लिए, हम मृत्यु को पाते हैं; सत्य के लिए, हम त्रुटि पाते हैं; आत्मा के लिए, हम इसके विपरीत, पदार्थ को पाते हैं। अब इस क्रिया को उल्टा कर दें। सत्य और प्रेम में शरीर से दूर देखो, सभी खुशी, सद्भाव और अमरता का सिद्धांत। धीरज, अच्छे और सच्चे विचार को दृढ़ता से पकड़ें, और आप अपने अनुभवों के अनुपात में इन्हें अपने अनुभव में लाएंगे।

9. 289 : 14-20

यह तथ्य कि क्राइस्ट या सत्य, मृत्यु पर काबू पा लेता है और "आतंकियों का राजा" साबित हो जाता है, लेकिन एक नश्वर विश्वास, या त्रुटि, जिसे सत्य जीवन के आध्यात्मिक प्रमाणों से नष्ट कर देता है; और इससे पता चलता है कि मृत्यु के प्रति इंद्रियों को जो दिखाई देता है वह वास्तविक मनुष्य और वास्तविक ब्रह्मांड के लिए एक नश्वर भ्रम है, लेकिन मृत्यु-प्रक्रिया नहीं है।

10. 215 : 22-24

अपने दिव्य प्रमाण के साथ, विज्ञान भौतिक अर्थ के प्रमाणों को उलट देता है। नश्वरता की हर गुणवत्ता और स्थिति खो जाती है, अमरता निगल जाती है।

11. 216 : 11-21, 28-1

यह समझ कि अहंकार मन है, और यह कि एक मन या बुद्धि है, एक बार में नश्वर अर्थ की त्रुटियों को नष्ट करने और अमर भावना की सच्चाई की आपूर्ति करने के लिए शुरू होता है। यह समझ शरीर को सामंजस्यपूर्ण बनाती है; यह तंत्रिकाओं, हड्डियों, मस्तिष्क इत्यादि को नौकरों के बजाय नौकर बनाता है। यदि मनुष्य दिव्य मन के नियम से संचालित होता है, तो उसका शरीर हमेशा की ज़िंदगी और सच्चाई और प्रेम को प्रस्तुत करने में है। मनुष्यों की महान गलती यह है कि उस आदमी को, भगवान की छवि और समानता को मानने के लिए, भौतिक और आत्मा दोनों अच्छाई और बुराई दोनों हैं।

जब आप कहते हैं, "मनुष्य का शरीर भौतिक है," मैं कहता हूं पॉल: "देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं" मन की भौतिक धारणा को भौतिकता में छोड़ दो, और एक मन है, यहाँ तक कि भगवान भी; इसके लिए मन अपनी समानता बनाता है।

12. 487 : 27-29

यह समझ कि जीवन ईश्वर है, आत्मा, जीवन की मृत्युहीन वास्तविकता, हमारे सर्वशक्तिमानता और अमरता में हमारे विश्वास को मजबूत करके हमारे दिनों को लंबा कर देती है।

13. 428 : 6-29

इस सर्वोच्च क्षण में मनुष्य का विशेषाधिकार हमारे मास्टर के शब्दों को साबित करना है: "कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा।" झूठे न्यासों और भौतिक साक्ष्यों के बारे में विचार करने के लिए ताकि आध्यात्मिक तथ्य सामने आ सकें — यह महान प्राप्ति है जिसके माध्यम से हम असत्य को मिटा देंगे और सत्य को स्थान देंगे। इस प्रकार हम मंदिर, या देह को सच में स्थापित कर सकते हैं, "जिसका निर्माता और निर्माता भगवान है।"

हमें अस्तित्व को संरक्षित करना चाहिए, न कि "अज्ञात भगवान को" जिसे हम "अज्ञानतावश पूजा करते हैं," लेकिन शाश्वत बिल्डर, हमेशा के लिए पिता, जीवन के लिए जो नश्वर भाव क्षीण हो सकता है और न ही नश्वर विश्वास नष्ट हो सकता है। हमें मानव की गलतफहमियों को दूर करने और उन्हें जीवन के साथ बदलने की क्षमता का एहसास करना चाहिए जो आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं।

महान आध्यात्मिक तथ्य को सामने लाना चाहिए कि मनुष्य है, पूर्ण और अमर नहीं। हमें हमेशा अस्तित्व की चेतना को धारण करना चाहिए, और जल्द ही या बाद में, मसीह और ईसाई विज्ञान के माध्यम से, हमें पाप और मृत्यु पर नियंत्रण रखना चाहिए। मनुष्य की अमरता के प्रमाण अधिक स्पष्ट हो जाएंगे, क्योंकि भौतिक विश्वासों को छोड़ दिया जाता है और होने के अमर तथ्यों को स्वीकार किया जाता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6